[ऋषि दयानन्द सरस्वती]

ओ३म्

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

(देवस्थान विभाग पंजी. क्र. : 6/2011/जालोर, स्थापना वर्ष - वि.सं. २०६० सन् 2003)

वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान, वेद विज्ञान मन्दिर

भागल भीम, भीनमाल - 343029, जिला - जालोर (राजस्थान)

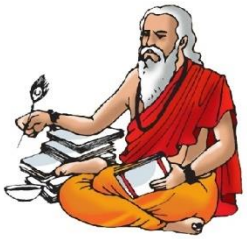
[महर्षि ऐतरेय महीदास]

तिथि : श्रावण कृष्णा एकादशी, वि.सं. २०८१, **दिनांक :** 31 जुलाई 2024

श्रीमत् स्वामी रामभद्राचार्य जी के नाम सार्वजनिक पत्र

सेवा में

आदरणीय श्री स्वामी रामभद्राचार्य जी!
कुलाधिपति, जगद्गुरु रामभद्राचार्य, विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट, उत्तर प्रदेश - 210202

सादर अभिवादन!

आशा है आप परमपिता 'ओम्' देव की कृपा से स्वस्थ एवं सकुशल हैं। इन दिनों आपका एक वक्तव्य विशेष चर्चा में है कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने रामायण और महाभारत को काल्पनिक बताया है। इस विषय पर आर्यसमाज के अनेक विद्वानों ने आपके इस नितान्त मिथ्या कथन पर गहरी आपत्ति व्यक्त करते हुए शास्त्रार्थ की चुनौती दी है। आप जानते हैं कि आपने मिथ्याभाषण का पाप किया है, इसलिए आप किसी की भी चुनौती को स्वीकार करने का साहस नहीं कर पा रहे हैं। इस विषय पर आर्य विद्वानों एवं प्रचारकों ने बहुत कुछ बोला और लिखा है। उन्होंने ठोस प्रमाणों के आधार पर आपके इस कथन का समुचित प्रतिवाद किया है। इस कारण मैं इस पर कुछ भी लिखकर पिष्टपेषण नहीं करना चाहता। हाँ, मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि एक प्रसिद्ध संन्यासी होकर भी आपने मिथ्या भाषण करने का अधर्म कैसे कर लिया? क्या सनातन धर्म के प्रचारक का यही कर्त्तव्य है? मैं नहीं समझता कि आपने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा नहीं होगा, जिसमें रामायण और महाभारत दोनों को ही पठन-पाठन क्रम में सम्मिलित किया गया है। मैं नहीं समझता कि आपको यह जानकारी नहीं है कि श्री रामनवमी और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी दोनों ही पर्व आर्यसमाज के पर्वों की शृंखला में महत्त्वपूर्ण पर्व हैं। प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर तथा अन्य आर्य संस्थाओं में वैदिक धर्म के मूर्तिमान् स्वरूप मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एवं योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण दोनों के ही सुन्दर चित्र अवश्य मिलेंगे।

मैं नहीं समझता कि आपको इस बात की जानकारी भी नहीं है कि आर्यसमाज के विद्वानों और प्रचारकों ने वैदिक सनातन धर्म और हिन्दू जाति पर विधर्मियों द्वारा होते रहे आक्रमणों को अपने सीने पर सहा है। बलिदानी आर्य पुरुषों के नाम बताने की आवश्यकता भी नहीं है, क्योंकि धर्मवीर पं० लेखराम, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल आदि को कौन नहीं जानता? हैदराबाद में हिन्दुओं पर हो रहे निजामशाही के अत्याचार और मोपलाओं द्वारा हिन्दुओं के नरसंहार के समय हिन्दुओं का रक्षक बनकर आर्यसमाज ही अग्रणी रहा, इस बात को आप जानते ही होंगे। विधर्मियों ने जब-जब हिन्दू देवी-देवताओं पर आक्रमण किए, आर्य विद्वानों ने ही उस पर लेखनी उठाई। आप लोगों ने कब किससे लोहा लिया, यह आपका आत्मा भलीभाँति जानता ही होगा। आज भी विधर्मियों से हमारे ही

विद्वान् लोहा ले रहे हैं। आप लोग तो कथाएँ कर-कर के प्रभूत धनैश्वर्य के स्वामी बनने में ही लगे हैं। आप लोगों ने सदैव आर्य विद्वानों, आर्यसमाज एवं ऋषि दयानन्द सरस्वती की मिथ्या निन्दा में ही अपना गौरव एवं सनातन धर्म की रक्षा समझी है। ईसाई, यहूदी, मुस्लिम, वामपन्थी एवं बामसेफ आदि संगठनों द्वारा वेदादि शास्त्रों एवं महापुरुषों की निन्दा के समक्ष आप अपने आश्रमों में सदैव मुँह छुपाये बैठे रहे हैं। आपको महापुरुषों एवं वेदादि शास्त्रों के सम्मान की कितनी चिन्ता है, यह इसी से स्पष्ट हो जाता है।

श्री स्वामिवर्य! सब कुछ जानते हुए भी आपने इतना बड़ा झूठ बोला, इसके पीछे का रहस्य (मन्तव्य) क्या है? आप विद्वान् हैं, इस कारण अनायास आपके मुँह से मिथ्या कथन हो गया, ऐसा तो नहीं माना जा सकता। यदि ऐसा होता, तो आप अपना आपत्तिजनक वीडियो हटाकर क्षमा माँगते हुए दूसरा वीडियो बना देते, परन्तु आपने सम्भवत: ऐसा अभी तक नहीं किया और उस वीडियो को केवल प्राइवेट किया है, यह शुद्ध हृदय का लक्षण नहीं है। ऐसी दशा में यह अवश्य ही आपकी कोई सोची-समझी कुटिल योजना है।

आज विश्व एक भयानक दौर से गुजर रहा है। विश्व स्तर पर इस्लामी, यहूदी, ईसाई, वामपन्थी, नवबौद्ध आदि सभी विधर्मी अपने-अपने ढंग से हिन्दुओं के विनाश की योजनाएँ बना रहे हैं। वेदादि शास्त्रों एवं भारतीय गौरवपूर्ण इतिहास पर कितना मिथ्या व घृणित साहित्य विदेशों तथा एवं अपने देश में बैठे विधर्मियों के एजेंटों द्वारा निरन्तर लिखा जा रहा है। शोध के नाम पर हमारे मूल पर प्रहार हो रहा है, परन्तु आप चिर निद्रा में डूबे हुए ऐश्वर्य भोगने में व्यस्त हैं। हिन्दुओं को वेदादि शास्त्रों से दूर करने के नाना उद्योग किए जा रहे हैं। वे जानते हैं कि स्वयं को सनातनी कहने वाला हिन्दू कथा-कहानियों, नाना कर्मकाण्डों के साथ-साथ जातिवाद में ही फँसा हुआ है। सभी राजनैतिक दल उन्हीं की चाल में फँसकर हिन्दुओं को बाँट रहे हैं। मुस्लिम, ईसाई, यहूदी ये सभी अपने-अपने महजबी ग्रन्थों का अध्ययन कर रहे हैं, परन्तु हिन्दू को तो वेद से सर्वथा काट दिया है। वह गीता, भागवतादि पुराण, रामचरितमानस आदि की सीमा से बाहर सोचने की बुद्धि ही खो चुका है। वह आप जैसे कथावाचकों को ही अपना भगवान् समझ बैठा है। ऐसे में विधर्मी प्रबुद्ध षड्यन्त्रकारियों को आपसे कोई खतरा नहीं है। विदेशी विज्ञान के अहंकार ने भी उनको गर्वोन्मत्त कर दिया है और हम भावुक मिथ्या कथाओं में ही अन्धे हो चुके हैं। हमें संकट का भान ही नहीं है। हमारे इसी अन्धेपन के कारण सभी मैकाले की कुशिक्षा तथा पश्चिमी आसुरी सभ्यता के दास बन चुके हैं।

वे विधर्मी अभी भी वेद व आर्यसमाज से शंकित व भयभीत हैं। उन्हें ऋषि दयानन्द से लेकर चली आ रही आर्यसमाज के विद्वानों की शास्त्रार्थ परम्परा का ज्ञान है। वे यह भी जानते हैं कि ऋषि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम भारतीयों को स्वराज्य का मन्त्र दिया और आर्यसमाज ही स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी रहा, इस कारण विदेशी विधर्मी शक्तियाँ हिन्दुओं को ही ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के विरुद्ध भड़का रही हैं तथा उसे इस्लाम के समान बता रही हैं। यह विदेशियों की बहुत खतरनाक योजना है, जिसे आर्यसमाज का विरोध करने वाले आप लोग समझ नहीं पा रहे। मूर्तिपूजा व अवतारवाद को न मानने वाले यदि इस्लाम जैसे हो गये, तब ऐसा कहने वाले गुरु नानकदेव, सन्त कबीर, विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर, रामस्नेही सम्प्रदाय, दादूदयाल, संत ज्ञानेश्वर आदि को इस्लाम से क्यों नहीं जोड़ते? गुरु नानक जी के अनुयायियों ने तो विधर्मियों, विशेषकर मुगलों के विरुद्ध संघर्ष भी किया था,

अपने प्राणों की आहुतियाँ भी दी थीं, तब भी आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द ही क्यों निशाने पर हैं ? वस्तुत: अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में मुख्य भूमिका आर्यसमाज की रही।

आज यहूदी व ईसाई शक्तियाँ फिर देश को अपना दास बनाना चाहती हैं। इस बार उनकी नीति सर्वथा पृथक् एवं दूरगामी है। इन्हें कहीं न कहीं आज भी ऋषि दयानन्द की स्वातन्त्र्य विचारधारा से भय प्रतीत हो रहा है, इस कारण इसे ही इस्लाम से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। अवतारवाद, बहुदेववाद व मूर्तिपूजा तो यहूदी व ईसाई भी नहीं मानते, तब आर्यसमाज के विरोधी आर्यसमाज को यहूदी व ईसाई से क्यों नहीं जोड़ते ? इस बात को समझने के लिए इतना ही संकेत पर्याप्त है कि ऐसा प्रचार करने के पीछे कौन शक्तियाँ हैं ? इन्हीं शक्तियों ने हमारी शिक्षा, साहित्य व इतिहास को बिगाड़ा है और निरन्तर यह काम चल रहा है। दुर्भाग्य से वर्तमान कथित राष्ट्रवाद का इन्हीं शक्तियों की ओर झुकाव होता प्रतीत हो रहा है। ऐसे बहुत कम हैं, जो वास्तविक राष्ट्रवाद को समझकर उसके लिए संघर्ष कर रहे हैं। भारतीयों को तो इस्लाम व ईसाई दोनों ने ही लूटा व खून बहाया है, परन्तु भारतीयों में यह समझ कब आयेगी कि वेदादि शास्त्रों के बिना भारत भारत नहीं रहेगा, वह यूरोप व अमेरिका बन जायेगा।

वे लोग यह भी जानते हैं कि पश्चिमी देशों में जो भी विज्ञान की चकाचौंध है, उसके पीछे कहीं न कहीं वेद एवं आर्ष ग्रन्थों की ही मौलिक भूमिका है। उनके पास आर्य्यावर्त (भारतवर्ष) से चुराया गया विपुल साहित्य है। वे चाहते हैं कि वेदादि शास्त्रों के यथार्थ स्वरूप को जानकर कोई हिन्दू (वस्तुत: आर्य) विज्ञान प्रकट न कर सके और प्राचीन आर्य्यावर्त के वैज्ञानिक गौरव को न जान सके कि कहीं भारत की युवा पीढ़ी को बौद्धिक दासता से मुक्ति न मिल जाये। भारतीयों में नया बौद्धिक स्वाभिमान न जाग जाये। वे यह भी जानते हैं कि यदि कोई ऐसा कर पायेगा, तो वह ऋषि दयानन्द से प्रेरित ही हो सकता है। इस कारण भी सभी विधर्मी शक्तियाँ आज भी आर्यसमाज को ही खतरा मानती हैं, इसलिए वे भोले हिन्दू समाज को आर्य समाज, ऋषि दयानन्द व वेद के विरुद्ध करने का पूर्ण प्रयास कर रही हैं। इस प्रयास के अन्तर्गत ही लगता है कि उन्होंने प्रसिद्ध हिन्दू धर्माचार्यों को खरीदना प्रारम्भ कर दिया है।

ध्यान व अध्यात्म की शिक्षा देने वाले, समाज सुधार की बातें करने वाले तथा सनातन धर्म के ध्वजवाहक क्या कहीं वेद का नाम ले रहे हैं ? सभी मौलवी कुरान की बात करते हैं, पादरी बाईबल की बात करते हैं, परन्तु वेद की बात कौन करता है ? तब वेद कितने दिन जीवित रहेगा ? विदेशी शक्तियाँ यह भी चाहती हैं कि कोई प्रसिद्ध हिन्दू धर्माचार्य यदि वेद का नाम ले भी, तो उसको एक साधारण पुस्तक सिद्ध करे, जिससे वेद को कुरान, बाइबिल जैसे ग्रन्थों से श्रेष्ठ सिद्ध नहीं किया जा सके। जैसे कुरान, बाइबिल में मानवीय इतिहास एवं मिथ्या कहानियाँ व चमत्कार वर्णित हैं, वैसा वेदों में भी सिद्ध कर दिया जाये। इससे वेद की अपौरुषयेता व सर्वविज्ञानमयता की धारणा समाप्त हो जायेगी। ऐसी स्थिति में हिन्दुओं का धर्मान्तरण करना सम्भव हो जायेगा। वे हमारे मूल पर प्रहार कर रहे हैं और ये हमारे कथित धर्माचार्य हिन्दुओं को फूल-पत्तियों के रंगों से मुग्ध करने का मिथ्या प्रयास कर रहे हैं। कोई प्रसिद्ध कथावाचक श्रीरामकथा में अली मौला कहकर झूम रहा है। क्या ऐसे कथावाचकों को हम विधर्मियों के क्रीतदास नहीं मानें ? जो वेद में इतिहास बताकर उसका अपौरुषेयत्व व सर्वज्ञानमयत्व को समाप्त करना चाहे, उसे क्यों न विदेशियों के द्वारा खरीदा हुआ अर्थात् वेद को मिटाने के उनके षड्यन्त्र का भाग मानें ?

मान्यवर! आप व्याकरणवेत्ता हैं, रामचरितमानस की चौपाइयों को अच्छा गाते हैं, स्मृति के धनी हैं, परन्तु आपको वेद की वर्णमाला का भी ज्ञान नहीं है, यह आपके वीडियो से स्पष्ट हो जाता है। महर्षि वाल्मीकि ने भगवान् श्रीराम को वेदवेदांगतत्त्वज्ञ कहा है और आप वेद में उन्हीं श्रीराम का इतिहास ढूँढते हैं। महर्षि वाल्मीकि ने जो कहा है, वह महान् वैज्ञानिक देवर्षि नारद के अनुसार कहा है, यह भी वाल्मीकि रामायण से स्पष्ट होता है। इस भूमण्डल के प्रथम राजा महाप्राज्ञ भगवान् मनु महाराज से लेकर महर्षि वेदव्यास पर्यन्त सभी ऋषि वेद को अपौरुषेय व सर्वविज्ञानमय मानते हैं, परन्तु आपको इन दिव्य पुरुषों में से कोई भी स्वीकार्य नहीं। भगवान् ब्रह्मा, भगवान् शिव, भगवान् राम, भगवान् कृष्ण एवं किसी भी ऋषि-मुनि, यहाँ तक कि आद्य शंकराचार्य ने भी वेद में मानवीय इतिहास की बात नहीं कही, परन्तु आप इन सबको मूर्ख समझकर अपनी मिथ्या धारणा का प्रचार कर रहे हैं। भला अपौरुषेय ग्रन्थ में कोई मानवीय इतिहास कैसे हो सकता है? जो ग्रन्थ सृष्टि के आदि का है, उसमें श्रीराम आदि किसी का भी इतिहास कैसे हो सकता है? क्या श्रीराम के विषय में आपको महर्षि नारद व महर्षि वाल्मीकि के प्रमाण स्वीकार्य नहीं? क्या इसे ही सनातन धर्म कहेंगे?

आप वेद की ऋचाओं के रूढ़ अर्थ कर रहे हैं। '**रामम्**' पद देखते ही आपको मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का इतिहास दिखाई दे गया? आप जिस मन्त्र से श्रीराम का इतिहास निकाल रहे हैं, उससे आपके शिष्य '**राम**' व '**भद्र**' दोनों पदों को दिखाकर आपका इतिहास दिखायेंगे। '**शतमदीनाः**' से कुछ मुस्लिम वेद में मदीना और तथाकथित कबीरपन्थी कारागार में बन्द रामपालदास '**कविर्मनीषीः** से वेद में संत कबीर जी का इतिहास सिद्ध कर रहा है। ऐसे वेदज्ञों से तो वेद भी भयभीत हो उठेगा। यदि ऐसे रूढ़ अर्थ करने लगें, तो अथर्ववेद ३.१७.४ में—

'इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु'

का आप क्या यह अर्थ करेंगे— 'इन्द्र सीता का अपहरण करे और पूषा उसकी रक्षा करे।' यह आपका कैसा ऐतिहासिक अर्थ होगा? रूढ़ अर्थ करने वाले इसका दूसरा अर्थ कर ही नहीं सकते। इसी प्रकार—

चत्वारि शृंगा त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आविवेश। (ऋ४.५८.३)

का भी रूढ़ अर्थ करके चार सींग, तीन पैर, दो सिर, सात हाथ वाले बैल को तीन प्रकार से बँधा हुआ मान लीजिए।

आप तो वैयाकरण हैं, तब तो इस बात को भी जानते होंगे कि व्याकरण वेद व लोक का अनुगमन करता है, न कि वेद वा लोक व्याकरण के अधीन होते हैं। पाणिनीय अष्टाध्यायी का अशिष्य प्रकरण एवं '**छन्दसि बहुलम्**', '**व्यत्ययो बहुलम्**' आदि सूत्र महर्षि पाणिनि ने व्यर्थ नहीं लिखे हैं। आपको प्रत्याहार सूत्रों में रामकथा दिखाई देती है। यह बात मुनि कात्यायन एवं महाभाष्यकार पतंजलि को नहीं सूझी और आपको सूझी। लगता है कि आपको किसी भी ऋषि-मुनि पर किंचित् भी विश्वास नहीं है, स्वयं को ही स्वयम्भू ब्रह्मा मानते हैं। स्वामी जी महाराज! श्रीराम कथा वा भागवत कथा करना अलग बात है, परन्तु वेदार्थ जानना सर्वथा पृथक् व क्लिष्टतम कार्य है। वेद परमपिता का ब्रह्माण्डीय ग्रन्थ है। वेद की ऋचाओं से ही सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण हुआ है। इसके लिए मेरा ग्रन्थ '**वेदविज्ञान-आलोकः**' पठनीय है। इसके

बिना संसार में कोई वेद के यथार्थ स्वरूप को समझने में समर्थ नहीं हो सकता। इसके पूर्व महर्षि दयानन्द द्वारा रचित '**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**' पठनीय है। वेद के सभी पद यौगिक हैं, जिन्हें ब्राह्मण ग्रन्थ एवं निरुक्त को गम्भीरतापूर्वक पढ़े बिना समझना असम्भव है। मेरा विशाल ग्रन्थ '**वेदविज्ञान-आलोकः**' ब्राह्मण ग्रन्थों में सबसे प्राचीन एवं रहस्यमय ब्राह्मण ग्रन्थ 'ऐतरेय ब्राह्मण' का वैज्ञानिक भाष्य है, जो विश्व में प्रथम बार हुआ है। ब्राह्मण ग्रन्थों व निरुक्त की भाषा रहस्यमय है। यदि इनका भी रूढ़ अर्थ कर दिया, जैसा कि मेरे भाष्य से पूर्व संसार के विद्वानों ने किया है, तो ब्राह्मण ग्रन्थों के रहस्य को कोई भी नहीं समझ पायेगा। इसी प्रकार निरुक्त ग्रन्थ के टीकाकारों ने भी निरुक्त के वैज्ञानिक रहस्य को अब तक नहीं समझा है। इस पर भी मेरा वैज्ञानिक भाष्य कुछ ही मास में संसार के समक्ष आ जायेगा।

मेरे इन दोनों ग्रन्थों को समझकर वेद के रहस्य सहजता से प्रकट होने लग जायेंगे। इस कारण आपसे अनुरोध है कि आप वेद में टाँग नहीं अड़ायें। यह आपके वश की बात नहीं है। आप जिस वेदमन्त्र में श्रीराम का इतिहास सिद्ध कर रहे हैं, यदि आपके ही प्रामाणिक वेदभाष्यकार आचार्य सायण को ही पढ़ लेते, तो भी अच्छा रहता। वस्तुतः सायणाचार्य भी वेद को समझने में समर्थ नहीं थे, इस कारण उन्होंने भी वेद के तत्त्व को जाना नहीं, परन्तु आपसे तो ठीक ही हैं। स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक एवं आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री आदि आर्य विद्वानों ने इस मन्त्र का सुन्दर भाष्य किया है, जिसमें भद्र का अर्थ सूर्य माना है। अब इस मन्त्र पर मैं अपना भाष्य कर रहा हूँ—

आपके द्वारा उद्धृत मन्त्र इस प्रकार है—

भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्नुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्॥ [ऋ० १०.३.३]

इस मन्त्र का ऋषि आप्त्यस्त्रित है। इसका अर्थ यह है कि इस छन्द रश्मि की उत्पत्ति सर्वत्र विद्यमान वा व्याप्त प्राणापानव्यान नामक रश्मियों के त्रिक् से होती है। इसका देवता अग्नि तथा छन्द निचृत् त्रिष्टुप् होने से इसके दैवत व छान्दस प्रभाव से इस सृष्टि में अग्नि तत्त्व तीक्ष्ण रक्तवर्णीय तेज से युक्त होने लगता है। इसके साथ ही इस छन्द रश्मि की विद्यमानता वाले क्षेत्र में विद्युत् चुम्बकीय बलों की भेदन क्षमता तीक्ष्ण होने लगती है। इससे सभी कणों की ऊर्जा में भारी वृद्धि होती है। इसका स्वर धैवत होने से महत् तत्त्व से अपेक्षाकृत विशेष सम्पन्न रश्मि अर्थात् सूत्रात्मा वायु रश्मियों की सक्रियता विशेष बढ़ जाने से विभिन्न कणों, तरंगों व रश्मियों के मध्य संयोजन की प्रक्रिया तीव्र होने लगती है।

इसका **आधिदैविक भाष्य** निम्नानुसार है—

(भद्रः, अग्निः, भद्रया) [यहाँ '**भद्रः**' पद पर विचार करते हैं। महर्षि यास्क अपने निरुक्त (४.१०) में लिखते हैं—

भद्रं भगेन व्याख्यातम्। भजनीयं भूतानामभिद्रवणीयम्। भवद्रमयतीति वा। भाजनाद्वा।

उधर '**भगः**' पद के विषय में महर्षि याज्ञवल्क्य लिखते हैं—

यज्ञो भगः (शत.६.३.१.१९)

इससे स्पष्ट होता है कि संगमनीय कण, जिनकी ओर विभिन्न रश्मि एवं कण आदि पदार्थ तीव्र गति से

गमन करते हैं, जिनमें व्याप्त होकर नाना प्रकार की क्रियाएँ सहजता से करते हुए अन्य पदार्थों को आधार प्रदान करते हैं। वे कण ही अग्नि कहलाते हैं। सभी मूलकण एवं फोटोन्स को अग्नि क्यों कहते हैं, इसके लिए हमारे ग्रन्थ '**वेदविज्ञान-आलोकः**' की पूर्वपीठिका पठनीय है। '**भद्रा**' के विषय में स्वयं ऋ.१०.७१.२ में कहा है—'**भद्रा लक्ष्मीः**' अर्थात् लक्ष्मी को भद्रा कहते हैं। उधर '**लक्ष्मीः**' पद का निर्वचन करते हुए महर्षि यास्क निरुक्त ४.१०. में लिखते हैं—

लक्ष्मीर्लाभाद्वा। लक्षणाद्वा। लप्स्यमानाद्वा। लाञ्छनाद्वा।
लषते स्यात्प्रेप्साकर्मणः लग्यतेर्वा स्यादाश्लेषणकर्मणः। लज्जतेर्वा स्यादश्लाघाकर्मणः

अर्थात् ऐसा पदार्थ, जिससे रूप गुण उत्पन्न होता है तथा जो विभिन्न पदार्थों को चिह्नित करने का गुण प्रदान करता है। जिसके कारण विभिन्न छन्द रश्मियाँ एक-दूसरे को प्राप्त करने की इच्छा करती हैं तथा एक-दूसरे पर अपना प्रभाव छोड़ने में समर्थ होती हैं। इस पदार्थ के कारण रश्मियाँ एक-दूसरे को आकर्षित करती हुई दीप्ति उत्पन्न करती हैं तथा परस्पर एक-दूसरे से मिलकर नाना प्रकार के कणों व विकिरणों को उत्पन्न करती हैं। इसके साथ ही यह पदार्थ विभिन्न प्रकार की रश्मियों को संकुचन का गुण प्रदान करता है अर्थात् संकुचन कर्म करने का सामर्थ्य प्राप्त होता है। लक्ष्मी के विषय में काठक संकलन १०३.९ में कहा गया है—

''श्रीश्च ते (पुरुषस्य = आदित्यस्य) लक्ष्मीश्च ते पत्न्या अहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ (द्यावापृथिव्यौ) व्यात्तम्''

अर्थात् लक्ष्मी नामक पदार्थ सूर्यादि तेजस्वी लोकों एवं फोटोन्स की पत्नी अर्थात् उनके स्वरूप की रक्षा करने वाले पदार्थों में से एक पदार्थ है। [हमारी दृष्टि में भूरादि व्याहृति रश्मियाँ, '**हिम्**' एवं '**घृम्**' रश्मियाँ ही लक्ष्मी नामक पदार्थ है।] इस सृष्टि में विभिन्न प्रकार के संयोजनीय कण '**भूः**' '**भुवः**', '**स्वः**', '**हिम्**' एवं '**घृम्**' रश्मियों के साथ (स्वसारम्, सचमानः, आ, अगात्) ['स्वसा' के विषय में निरुक्तकार का कथन है— स्वसा सु असा। स्वेषु सीदतीति वा (निरुक्त ११.३२)] अर्थात् अपने निकटस्थ कणों के साथ सम्पृक्त होते हुए सब ओर से व्याप्त होने लगते हैं।

(जारः, पश्चात्, अभि, एति) वे संयोजनीय कण संयोग प्रक्रिया में बाधक बनने वाली असुर ऊर्जा को जीर्ण वा नष्ट करके भद्रा अर्थात् उन उपर्युक्त भूरादि रश्मियों को आगे करके पीछे-पीछे गमन करते हैं। (सुप्रकेतैः, द्युभिः, वितिष्ठन्) [प्रकेतनम् = प्रज्ञाततमम् (निरुक्त २.१९) वे कण विज्ञानपूर्वक प्राण रश्मियों व आकाश तत्व में विशेष प्रकार से स्थित रहते हुए (रुशद्भिः, वर्णैः) दीप्ति एवं आकर्षण गुणों से युक्त अव्यक्त विविध रंगों वाली रश्मियों के द्वारा (रामम्, अभि, अस्थात्) [राम्या रात्रिनाम (निघं.१.७)] अप्रकाशित वायु अर्थात् असुर पदार्थ को सब ओर से घेरकर नियन्त्रित वा नष्ट कर देते हैं।

भावार्थ— यहाँ सृष्टि में सूर्यादि लोकों अथवा विशाल खगोलीय मेघों के अन्दर विभिन्न सूक्ष्म कणादि पदार्थों के मध्य पारस्परिक संयोग की प्रक्रिया के एक अंश को दर्शाया है। संयोग करने योग्य सूक्ष्म कण अर्थात् आयन अथवा मूल कण जब आकाश में गमन करते हैं, उस समय उनके साथ '**भूः, भुवः** एवं **स्वः**', '**हिम्**' एवं '**घृम्**' जैसी सूक्ष्म रश्मियाँ सम्पृक्त रहती हैं। इसके साथ ही संयोग प्रक्रिया के समय भी भूरादि व्याहृति रश्मियाँ प्रकट होने लगती हैं? ये सूक्ष्म रश्मियाँ विभिन्न कणों की अंगभूत छन्दादि

रश्मियों में विशेष आकर्षण व संकुचन का गुण उत्पन्न करके उनके मध्य पारस्परिक आकर्षण, धारण आदि का गुण उत्पन्न करती हैं। इनके कारण विभिन्न लोकों में परस्पर संयोजनीय कणों के मिथुन एवं अनेक कणों के संयुक्त रूप उत्पन्न वा प्रकट होने लगते हैं। इन भूरादि रश्मियों के कारण आकाश में विद्यमान विभिन्न छन्द व प्राणादि रश्मियाँ संयोग प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न करने वाली असुर ऊर्जा को आच्छादित करके छिन्न-भिन्न कर देती हैं। जब दो कण परस्पर संयोगार्थ एक-दूसरे की ओर बढ़ते हैं, तब भी भूरादि सूक्ष्म रश्मियाँ उनकी अग्रगामिनी होकर आगे-आगे चलती हैं। उस समय उन संयोज्य कणों के चारों ओर विभिन्न प्राणादि रश्मियाँ एवं उनके द्वारा विज्ञानपूर्वक संकुचित होता हुआ आकाश विद्यमान होता है। इसका अर्थ यह है कि दो कणों के मध्य कार्यरत बल अथवा उत्पन्न होने वाले बल की तीव्रता व प्रकृति उन कणों के चारों ओर विद्यमान भूरादि सूक्ष्म रश्मियों एवं छन्द व प्राण रश्मियों के कारण आकाश तत्त्व के संकुचन वा विकृति पर निर्भर होती है। जब इन कणों के मध्य संयोग होने वाला होता है, तब अप्रकाशित वायु (वर्तमान भाषा में डार्क एनर्जी कह सकते हैं) बाधक बनने का प्रयास करता है। उस समय भूरादि रश्मियों के साथ-साथ विभिन्न प्राणादि रश्मियाँ प्रकट होकर नाना प्रकार के अव्यक्त रंगों को उत्पन्न करने वाली छन्द रश्मियों को उत्पन्न करती हुई उस अप्रकाशित पदार्थ पर आक्रमण करके व उसे छिन्न-भिन्न करके आकाश तत्त्व में मिला देती हैं और कणों का संयोग निर्विघ्न सम्पन्न हो जाता है।

आधिभौतिक भाष्य— (भद्रः, अग्निः) [अग्निः = अग्रणीर्भवति (निरुक्त ७.१४), प्रजापतिरग्निः (श.६.२.१.२३) प्रजा का पालक ज्ञान, विज्ञान, बल एवं सदाचार आदि शुभ गुणों की दृष्टि से राष्ट्र में सबसे अग्रणी अर्थात् सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, जो अपनी प्रजा का निरन्तर अभ्युदय ही करने का प्रयत्न करता है, ऐसा वेदवित् राजा (भद्रया, सचमानः) अपनी सर्वकल्याणकारिणी नीति व शिक्षा के साथ सदैव सम्पृक्त रहता हुआ (स्वसारम्, आ, अगात्) अपने राष्ट्र में उत्तम गुणों के साथ रहने वाली प्रजारूपी स्वसा को सर्वत्र सर्वदा प्राप्त होता है। (जारः, पश्चात्, अभि, एति) अन्याय, अज्ञान व अभाव जैसे प्रजा के शत्रुओं वा अन्य समाज व राष्ट्रविरोधी शक्तियों को जीर्ण वा नष्ट करने वाला राजा स्वयं अपने राष्ट्र के विधान का अनुगमन करता हुआ सम्पूर्ण राष्ट्र में विचरता है अर्थात् शासन करता है।

(सुप्रकेतैः, द्युभिः, वितिष्ठन्) वेदादि शास्त्रों की प्रसिद्ध विद्याओं के प्रकाश से तेजस्वी होता हुआ निरन्तर प्रजा के कल्याण करने में विशेष रूप से स्थित हुआ निरन्तर (रुशद्भिः, वर्णैः) अपने-अपने गुणों व विद्या से प्रकाशित ब्राह्मणादि चारों वर्णों के द्वारा अथवा सभी वर्णस्थ प्रजा के साथ मिलकर (रामम्, अभि, अस्थात्) सम्पूर्ण राष्ट्र से नाना दुःखों रूप अन्धकार को सब ओर से मिटा देता है।

भावार्थ— किसी भी राष्ट्र में ज्ञान-विज्ञान, बल, शौर्य एवं सदाचार आदि उत्तमोत्तम गुणों से युक्त सर्वश्रेष्ठ मनुष्य को ही राजा बनाना चाहिए। ऐसा राजा ही प्रजा का कल्याण करने में समर्थ हो सकता है, अन्य नहीं। वह राजा अपने राष्ट्र के सर्वहितकारी संविधान का स्वयं भी पालन करता हो तथा सम्पूर्ण प्रजा को सदैव सुलभ रहने वाला हो। वह राजा अपने राष्ट्र में अन्याय एवं अन्यायकारी दुष्ट शत्रुओं को नियन्त्रित करने वा नष्ट करने में सक्षम हो और ऐसा करने के लिए सर्वदा उद्यत भी रहने वाला हो। वह वेदविद्या के तेज से सम्पन्न रहकर अपने राष्ट्र के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र, इन चारों वर्णों को साथ लेकर सम्पूर्ण राष्ट्र की सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान करे। इसका अर्थ यह है कि राष्ट्र के समग्र कल्याण में

राजा को चारों वर्णों का सहयोग मिलना अनिवार्य है और इसी प्रकार राजा भी सभी वर्णों का समान रूप से कल्याण करने का निरन्तर प्रयास करे।

आध्यात्मिक भाष्य— (भद्रः, अग्निः) सबका कल्याणकारी सम्पूर्ण सृष्टि का नायक प्रकाशरूप परमेश्वर (भद्रया) अपनी कल्याणी वेदवाणी के साथ अर्थात् विज्ञानपूर्वक (स्वसारम्, सचमानः, आ, अगात्) [स्वसा = अंगुलिनाम (निघं.२.५) सु+असु क्षेपणे (दिवा.) धातोः 'सावसेर्ऋन् (उ.को.२.९८)] अपनी शक्ति से सम्पृक्त वा सम्पन्न रहता हुआ सम्पूर्ण सृष्टि में सर्वत्र व्याप्त है। (जारः, पश्चात्, अभि, एति) प्रलयकाल में सभी उत्पन्न पदार्थों को जीर्ण वा नष्ट करने वाला एवं सब धार्मिक मनुष्यों के अविद्यान्धकार को दूर करने वाला परमात्मा अपने ज्ञान व बल को आगे करके हमें सर्वत्र प्राप्त होता है। (सुप्रकेतैः, द्युभिः, वितिष्ठन्) वह परमेश्वर अपने सुप्रसिद्ध तेज में विराजमान रहता हुआ (रुशद्भिः, वर्णैः) अपने वरणीय तेज के द्वारा (रामम्, अभि, अस्थात्) अज्ञानादि दुःखों के अन्धकार को दूर करता है।

भावार्थ—इस सृष्टि का नायक परमपिता परमात्मा अपनी कल्याणी वेदवाणी द्वारा सबका कल्याण करने वाला है। वह अपनी शक्ति व विज्ञान के साथ सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है तथा सम्पूर्ण सृष्टि का यथासमय प्रलय करने वाला है। ब्रह्माण्ड में कार्यरत प्रत्येक प्रकार के बल व ऊर्जा के पीछे उसका अनन्त विज्ञान भी कार्य करता है अर्थात् सृष्टि की प्रत्येक क्रिया विज्ञानपूर्वक हो रही है। वह अपने साधकों के अविद्यादि दोषों को दूर करके उन्हें परमानन्द प्रदान करने वाला होता है।

स्वामी जी महाराज! मैंने यह तीन प्रकार का भाष्य किया है। किसी भी मन्त्र के तीन श्रेणियों में अनेक भाष्य किए जा सकते हैं, इनमें भी आधिदैविक भाष्य ही मूल व स्वाभाविक भाष्य होता है, शेष भाष्य द्वितीय कोटि के भाष्य कहे जा सकते हैं। मैं आपसे विनम्र निवेदन करता हूँ कि मेरे द्वारा किये गये आधिदैविक भाष्य को कई बार पढ़वाकर मनन करें, तब सम्भवतः कुछ समझ में आये। मेरे भाष्य की प्रक्रिया को समझने के लिए वैदिक रश्मि विज्ञान के मूल तत्त्वों को समझना अनिवार्य है। **वैदिक फिजिक्स** यूट्यूब चैनल पर **'वेदविज्ञान-आलोकः कक्षा'** नामक वीडियो शृंखला क्रमशः सुनने व समझने से भी वैदिक रश्मि विज्ञान समझ में आ जायेगा, तदुपरान्त वेद का वैज्ञानिक स्वरूप भी समझ में आने लगेगा। मान्यवर! आपको ईश्वर ने स्मरण शक्ति अच्छी दी है, परन्तु शास्त्रों को केवल स्मरण कर लेना पाण्डित्य नहीं है। कम्प्यूटर में हजारों ग्रन्थ सुरक्षित रख सकते हैं, इससे कम्प्यूटर शास्त्रवित् नहीं हो सकता। इसके लिए प्रबल तर्क शक्ति, अन्तःप्रज्ञायुक्त ऊहा एवं पूर्ण सात्त्विक साधक जीवन की अनिवार्यता है। आज इसका ही भारी अकाल है। सर्वत्र अर्थ एवं काम की आसक्ति का बोलबाला है। सभी प्रसिद्ध धर्माचार्य माने जाने वाले महानुभाव करोड़ों के स्वामी हैं एवं उनकी दृष्टि सदैव धन व यश पर ही रहती है, तब उन्हें शास्त्रों का रहस्य कैसे समझ आयेगा?

मान्यवर! आप आयु में मुझसे ज्येष्ठ हैं। आप संन्यासी हैं और मैं नैष्ठिक ब्रह्मचारी, इस कारण भी आप मेरे लिए आदरणीय हैं। इस कारण मैं आपसे विनम्र निवेदन कर रहा हूँ कि वैदिक सत्य सनातन धर्म एवं इस आर्य्यावर्त (भारतवर्ष) को बचाने के लिए हमारे साथ मिलकर चलें, अन्यथा यह देश व सनातन धर्म सब कुछ मिट जायेगा। इसके मिटने से सम्पूर्ण हिन्दू समाज ईसाई, मुस्लिम, यहूदी वा कम्युनिस्ट बनकर पाश्चात्य कुसभ्यता के अन्ध कूप में सदा के लिए समा जायेगा। इससे बचने के लिए वेद के विज्ञान के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।

आयें, मिलकर वेद, देश व सनातन धर्म अर्थात् मानवता को बचायें। इसी निवेदन के साथ

वेदमाता का विनम्र सेवक

आचार्य अग्निव्रत

संस्थापक प्रमुख, वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान

(श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)

फोन नम्बर : 9829148400

ईमेल : info@vaidicphysics.org

जय माँ वेद भारती